CHETNA

नन्ही दुनिया

HCL FOUNDATION

HCL फाउंडेशन के सहयोग से चेतना द्वारा प्रकाशित

न्यूजलेटर द्वितीय अंक अप्रैल– सितम्बर 2021

बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने हेतु स्वयंसेवियों ने चलाई उदय शाला

कोविड–19 महामारी की पहली लहर के बाद बच्चों के स्कूल खुले ही थे कि फिर दूसरी लहर आ गयी जिसने पुरे देश को झकझोर के रख दिया और पुनः बच्चों के स्कूल तुरंत बंद कर दिए गए. एक बार फिर वो बच्चे जिनकी पहुँच इन्टरनेट तक नहीं थी की शिक्षा से दूर होने की सम्भावना बड़ गयी तभी HCL फाउंडेशन एवं उनकी साथी संस्थाओं ने सभी सरकारी नियमों का पालन करते हुए समुदाय के स्वयंसेवियों के साथ मिल कर उदयशाला का संचालन किया।

जैसे ही कोविड–19 महामारी के कारण स्कूल बंद हुए और बच्चे अपने घरों में परिवार के साथ ही रहे तब शिक्षा विभाग एवं अन्य शिक्षण संस्थाओं ने पढ़ने वाले बच्चों तक पहुँचने के तरीके खोजने शुरू किये। सबके सामने बस एक ही तरीका था और वह था ऑनलाइन शिक्षा देना जो कि कई मायने में कारगर साबित भी हुई। परन्तु ऑनलाइन शिक्षण से बहुत कम बच्चे ही जुड़ पाए और जो बच्चे ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ पाए थे उन बच्चों को प्रतिदिन इंटरनेट कनेक्टिविटी से लेकर सही समय पर स्मार्टफोन की उपलब्धता को लेकर समस्या बनी रही। यह समस्या केवल बच्चों को ही नहीं बल्कि शिक्षकों को भी रही। इन समस्याओं को समझते हुए HCL फाउंडेशन की साथी संस्था बोध शिक्षा समिति और कथा संस्था ने ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के साथ–साथ कोविड गाइडलाइन की पालना करते हुए ऑफलाइन शिक्षण की तैयारी भी की और स्थानीय स्वयंसेवियों के सहयोग से उदय शाला संचालित की। जिसका परिणाम यह हुआ कि 4656 बच्चों को 219 उदय शाला के माध्यम से शिक्षा से जोड़ा रखा.

उदय शाला एक वैकल्पिक व्यवस्था थी ताकि बच्चों को स्कूलों के समतुल्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके. यहाँ वे बच्चे जो ऑनलाइन शिक्षा से नहीं जुड़ पा रहे थे या ऑनलाइन शिक्षा से मिलने वाली शिक्षा को समझ नहीं पाते थे को उन्ही के समुदाय में किसी खुले स्थान पर माता–पिता की सहमति से स्कूलों को सूचित कर उदय शाला से जोड़ा गया. एक उदय शाला में मात्र 10–12 बच्चों की उपस्थिति में ही शिक्षण कार्य किया जाता था. सर्वप्रथम साथी संस्थाओं की टीम द्वारा समुदायों में विजिट की गई जिसमें समुदाय के सदस्यों से समर्थन प्राप्त करके उन समुदायों में शिक्षण केंद्र बनाए एवं स्थानीय स्वयंसेवियों को चिन्हित भी किया। कुछ माता–पिता ने तो अपने घर में जगह उपलब्ध कराने और शिक्षण केंद्रों के लिए आवश्यक व्यवस्था करने जैसा समर्थन भी दिया। साथी संस्थाओं ने उदय शाला में छात्र–छात्राओं को शिक्षण सामग्री जैसे – वर्कशीट, पेपर, चार्ट, पोस्टर, रंग, क्रेयॉन, नोटबुक, पेंसिल उपलब्ध करवाई, उन्हें कहानी–कविता और अन्य मजेदार गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा से जोड़ा साथ ही स्थानीय वालंटियर को भी प्रशिक्षण दिया

यह पूरा प्रयास सामुदायिक पहल से चलाया गया जिसमे सरकारी स्कूल के साथ–साथ 40 स्थानीय वालंटियर्स एवं 05 शिक्षकों ने पुरी इमानदारी से बच्चों को शिक्षा से जोड़ा रखा. प्रत्येक उदय शाला सप्ताह में 03 दिन 02 घंटे प्रति समूह प्रति कक्षा चलती थी जिसमे अधिकतम 10 बच्चे रहते थे। स्थानीय वालंटियर्स एवं शिक्षकों ने प्रतिदिन 06 से 07 घंटे काम किया एवं उदय शाला का सफल संचालन किया। इन उदय शालाओं के बच्चों को हिंदी, अंग्रेजी और गणित बच्चों के स्तर के अनुसार सरलतम गतिविधियों एवं रुचिकर तरीके से पढ़ाया। आज भी स्वयंसेवक छात्रों को किसी भी प्रकार की शैक्षणिक सहायता प्रदान करने के लिए फोन के माध्यम से हमेशा उपलब्ध रहते हैं। शुरुआत में स्वयंसेवक बिना किसी मानदेय के बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने हेतु उदय शालाओं का संचालन कर रहे थे और बाद में HCL फाउंडेशन द्वारा स्वयंसेवकों को उनके शिक्षण समर्थन के लिए सहयोग किया।

बाल संसद के माध्यम से बच्चों में की जायेगी नेतृत्व क्षमता की वृद्धि

HCL फाउंडेशन और चेतना संस्था नोएडा और लखनऊ के 16 सरकारी विद्यालयों के छात्र –छात्राओं की लीडरशिप क्षमता को बढ़ाने और उनके भागीदारी के अधिकार को सुनिश्चित करने हेतु काम कर रही है। इसी क्रम में लखनऊ और नॉएडा के 06 सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के साथ टीचर ओरिएंटेशन प्रोग्राम किया गया जिसमे उनके साथ इस कार्यक्रम की संपूर्ण प्रक्रिया साझा की एवं बताया गया कि बाल संसद के माध्यम से बच्चों में नेतृत्व क्षमता की वृद्धि की जायेगी. इन विद्यालयों में नोएडा के उच्च प्राथमिक विद्यालय मिलकलक्षी और उच्च प्राथमिक विद्यालय होशियारपुर रहे और लखनऊ में जी.जी.आई.सी. इंदिरा नगर ,जी.जी.आई.सी. गोमतीनगर ,राजकीय इन्टर कॉलेज निशात गंज , राजकीय जुबली इन्टर कॉलेज लखनऊ रहे। इन सभी विद्यालयों के लगभग 55 शिक्षकों के साथ माय स्कूल कार्यक्रम का ओरिएंटेशन किया गया जिसमे उपस्थित सभी शिक्षकों को सर्वप्रथम चेतना संस्था के बारे में बताया गया एवं उनके द्वारा HCLफाउंडेशन के साथ मिल कर बाल– अधिकारों पर किये जा रहे कार्यों की

जानकारी दी. माय स्कूल के अंतर्गत बाल संसद के बारे में बताया गया कि विद्यालयों में लोकतांत्रिक तरीके से बाल संसद का गठन किया जाएगा जिसमे बच्चे उसका नेतृत्व करेंगे जिसके लिए बच्चों को तैयार किया जाएगा. संस्था द्वारा बाल अधिकारों पर , लीडरशिप पर सेशन लिए जायेंगे. हर विद्यालय में जो बाल संसद का गठन किया जाएगा उसमे भी छोटी छोटी समितियां बनाई जायेंगी जिसके माध्यम से बच्चों को छोटी–छोटी

शेष पृष्ठ (4) पर

समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने का एक प्रयास

पिछले कई दिनों में कोरोना को लेकर या उसके टीकाकरण को लेकर कई प्रकार की भ्रांतियां फैली जिससे बचाने के लिए HCL फाउंडेशन की साथी संस्था शेफ (SHEF) ने स्कुल में पढ़ने वाले बच्चों एवं उनके परिवारजनों के लिए एक नवीन प्रयास किया।

इस प्रयास का नाम रखा गया 'न्यूज रीडिंग सीरीज'। कोविड –19 टीकाकरण के बारे में जागरूकता फैलाने के प्रयासों को जारी रखते हुए, साथी संस्था SHEF ने HCL फाउंडेशन के सहयोग से 'न्यूज रीडिंग सीरीज' के तहत छोटे–छोटे वीडियो बनाए, जिसका उद्देश्य बच्चों और माता–पिता के लिए सही जानकारी और तथ्यों को सुलभ बनाना था। चारों ओर फैली नकारात्मकता, मिथ्या धारणाओं और भ्रांतियों को ध्यान में रखते हुए यह समय की मांग थी और समय की मांग को पूरा करने हेतु संस्था के साथियों ने कोविड–19 और इसके टीके के बारे में विशिष्ट विषयों के प्रमुख समाचार लेखों को 'जानकारी ले, जागरुक बने' शीर्षक के तहत कवर करते हुए छोटे वीडियो बनाए। श्रृंखला को संकलित किया गया और ऑनलाइन स्कूल समूहों के माध्यम से बच्चों और अभिभावकों को साप्ताहिक भेजा गया। इस प्रयास ने समुदाय में टीकाकरण के लिए झिझक और डर को दूर करने में मदद की। माता–पिता द्वारा भी कई सवालों और शंकाओं के साथ साथी संस्था तक पहुंचे जहाँ उन्हें खुशी–खुशी सही जानकारी प्रदान की गयी। इस प्रकार उन्हें अपने और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए कदम उठाने के लिए सोचने, विश्लेषण करने और कार्य करने में सक्षम बनाया। इस पहल ने हमारे बच्चों को टीके की अनिवार्यता का एहसास कराने में भी मदद की। हमारे कई बच्चों ने कदम बढ़ाया और अपने माता–पिता को SHEF टीम की मदद से CoWin ऐप पर पंजीकरण करने और अपने माता–पिता के लिए वैक्सीन स्लॉट बुक करने में मदद की।

बाल मित्र पोर्टल से बच्चों ने जारी रखी अपनी शिक्षा

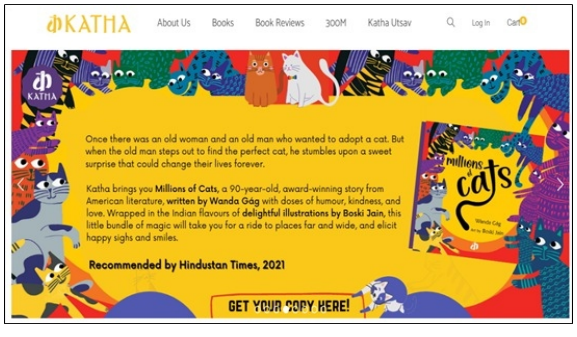

कोविड महामारी ने हजारों–लाखों बच्चों से उनकी स्कूली शिक्षा छीन ली और इस दौरान वे केवल ऑनलाइन शिक्षा ही ले रहे है . इस अवसर पर HCL फाउंडेशन एवं उनकी साथी संस्था कथा ने बच्चों के ऑनलाइन शिक्षा को और मनोरंजक बनाया और बच्चों के लिए लाये एक बाल मित्र पोर्टल। बच्चों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने एवं उनमे क्रियाशीलता को बनाये रखने के लिए कथा संस्था ने एक वेब पोर्टल बनाया जो कि बच्चों के लिए बहुत ही लाभकारी था और बच्चों के सीखने के स्तर को बनाए रखने में भी लाभकारी सिद्ध हुआ. इस पोर्टल पर बच्चों को अपने घर पर रहकर ही खूबसूरत चित्रों के माध्यम से विश्व स्तरीय शिक्षा सामग्री उपलब्ध हो पाई। इस पोर्टल की सबसे बड़ी खूबी यह है कि ऑनलाइन होने की वजह से इसका उपयोग न केवल स्कूल जाने वाले बच्चे कर सकते है बल्कि ऐसा बच्चा भी कर सकता है जिसने अभी–अभी स्कूल जाना शुरू किया है. कोविड–19 महामारी में जहाँ हर तरफ अफरा–तफरी थी और हर कोई मानसिक तनाव में था तब स्कूल के बच्चों को मनोरंजन के माध्यम से शिक्षा देने का यह बड़ा ही सराहनीय कदम साथी संस्था ने उठाया जिसके माध्यम से माय स्कूल के 27 विद्यालयों के 4678 बच्चों ने इसका लाभ उठाया। पोर्टल कहानी शिक्षाशास्त्र की सक्रिय कहानी–आधारित शिक्षा (Active Story Based Learning) प्रथाओं को आगे बढ़ाता है ताकि बच्चे शिक्षा से जुड़े रहे और शिक्षा का आनंद भी ले। इस पोर्टल को बनाने में साथी संस्था के साथियों ने समुदायों और बच्चों से मिल कर उनकी जरुरत को समझ कर एक बेहतरीन शिक्षा सामग्री एकत्रित की जिसको पोर्टल के माध्यम से हजारों बच्चों तक पहुँचाया. बच्चों को पढ़ने के लिए इस पोर्टल में अलग–अलग विषयों पर चित्रों सहित कहानी सुनायी जाती है इसमें बच्चों का बड़ा मन लगता है और फिर उस कहानी में से कुछ शब्द बच्चों को सिखाये जाते है और उन शब्दों का अर्थ बताया जाता है. इस तरह बच्चों को पढ़ने के लिए सीखने के लिए धाराप्रवाह पढ़ना सिखाते हैं।

बच्चों का कोना

बदलाव का उदय

माय स्कूल से जुड़े बच्चों के जीवन में हुए सकारात्मक परिवर्तन

पढ़ना लिखना इतना आसान और मजेदार होगा कभी सोचा नहीं था

14 वर्षीय कु. सरला (परिवर्तित नाम) उच्च प्राथमिक विद्यालय इटेड़ा की छात्रा है जो कि हमेशा HCL फाउंडेशन की साथी संस्था प्रवाह द्वारा कराई गयी हर गतिविधि में सक्रिय भागीदारी करती है और हमेशा दिए गए कार्यों को जिम्मेदारी से करती है। सरला (परिवर्तित नाम) ने बताया कि HCL फाउंडेशन के साथ जुड़ना उसके लिए एक नया और रोमांचक अनुभव था क्योंकि यह पहली बार था जब वह इस तरह की मनोरंजक एवं शैक्षिक गतिविधियों का हिस्सा थी. सरला के शब्दों में पढ़ना लिखना उसके लिए इतना आसान और मजेदार कभी नहीं था क्योंकि स्कुल की कक्षाओं में जो भी पढ़ाया जाता है उसका एक अलग तरीका होता है जिसको समझना थोड़ा मुश्किल होता है. वह एक समूह गतिविधि में पुलिसकर्मी की भूमिका को याद करती है क्योंकि वह भविष्य में एक आईपीएस अधिकारी बनना चाहती है, इस गतिविधि ने न केवल उसे अपने लक्ष्य के प्रति अधिक समर्पित बना दिया, बल्कि विभिन्न पद धारकों द्वारा निभाई गई भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझा। सरला ने बताया कि उसने बहुत कुछ सीखा जो उसके अनुसार भविष्य में उसकी मदद करेंगे, उदाहरण के लिए बाल अधिकारों का ज्ञान जो पहले उसके पास नहीं था और नेतृत्व के महत्व को समझने पर उसे हर जरूरतमंद व्यक्ति के प्रति सहानुभूतिपूर्ण बना दिया है।.

सरला (परिवर्तित नाम) ने उत्साह से हमारे साथ साझा किया कि वह भविष्य में इसी तरह के सीखने के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनना पसंद करेगी और सीखी गई चीजों को अपने इलाके के अन्य छात्रों तक ले जाने की पूरी कोशिश करेगी। 'मैं और मेरी बहन भी मोहल्ले के बाकी बच्चों को ये सब बताएँगे जैसे आपने हमको बताया।

नाटक की क्लास में हम खेल–खेल में बहुत कुछ सीखते हैं

प्रिया (परिवर्तित नाम) अजगरपुर प्राइमेरी स्कूल की छात्रा है जो HCL फाउंडेशन की साथी संस्था कुटुंब के साथ जुड़ी हैं । प्रिया (परिवर्तित नाम) बहुत ही होशियार है, कही गयी किसी भी बात को जल्दी से समझ लेती है और उसे अपने जीवन में उपयोग में भी लाती है। समय पर आना, छुट्टी लेने पर खुद फोन करके पूछना उसकी अनेक आदतों में से है। प्रिया (परिवर्तित नाम) क्लास में खुद से आगे बढ़ के भाग भी लेती है, कुछ समझ ना आने पर सवाल पूछती है, और कोई बात कहने में हिचकिचाती नहीं है। प्रिया (परिवर्तित नाम) नाटक की कक्षा के बारे में बताती है, "मुझे नाटक की क्लास बहुत पसंद है, इस क्लास में हम खेल–खेल में बहुत कुछ सीख लेते हैं। इसमें सिर्फ एक जगह बैठना नहीं होता, काफी चीजें हमें करते–करते समझ आती हैं। इस क्लास की सबसे अच्छी चीज है कि यहाँ हमारी बात को सुना जाता है." साथी संस्था के साथ जुड़ कर इसने कई नाटकों में हिस्सा लिया और उससे बहुत कुछ सीखा। उसकी सबसे मनपसंद क्लास थी जिसमें ओहदे पर बात की गयी थी और जिसे शारीरिक भाषा से दिखाया था, फिर अगले दिन उसने अपने आस–पास के लोगों की शारीरिक भाषा पर ध्यान दिया और उनके ओहदे के बारे में अगली कक्षा में बताया. अब प्रिया (परिवर्तित नाम) अपने मन की बात लोगों के सामने रखने से नहीं हिचकिचाती, वो जैसा सोचती है वैसे ही सबके सामने अपनी बात रखती है।

लीडरशिप के सेशन में हमने मुसीबत में फंसे बच्चों की मदद करना सीखा

वंदना (परिवर्तित नाम) प्राथमिक विद्यालय बरोला की छात्र रही है जिसने HCL फाउंडेशन की साथी संस्था चेतना द्वारा संचालित बाल संसद परियोजना की सभी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की जिसकी वजह से साथी संस्था ने उसे बाल नेता भी बनाया था. चाहे बाल अधिकार पर सत्र हो या बाल नेतृत्व पर डिजिटल सत्र हो हर कक्षा में वंदना (परिवर्तित नाम) शामिल हुई और बहुत कुछ सीखा और न केवल सीखा उसने अपनी सीख का अपने रोजमर्रा के जीवन में अभ्यास भी किया. जब महामारी के समय सब जगह तालाबंदी थी तो उसने अपने पिता के सहयोग से दो जरूरतमंद परिवारों को किराने का सामान उपलब्ध कराया। इसके अलावा एक दिन उसे अपने समुदाय में एक 03 वर्षीय लापता बच्ची मिली। एक बाल नेता के रूप में वंदना (परिवर्तित नाम) ने अपनी जिम्मेदारी निभायी और सबसे पहले बच्चे के माता–पिता की तलाश करने के लिए बच्चे के साथ समुदाय में गई, लेकिन माता–पिता नहीं मिले. फिर बाल अधिकारों और नेतृत्व क्षमता के सत्रों में जो उसने सीखा था उसका उपयोग किया और 1098 पर कॉल की। 1098 पर कॉल करने के बाद वह फिर से समुदाय में गई और बच्चे के माता–पिता को खोज निकाला. पुरी जांच पड़ताल करने के बाद बच्ची को उसके माता–पिता को सौंप दिया। वंदना (परिवर्तित नाम)ने बताया कि जब लापता लड़की ने अपने माता–पिता को देखा तो वह भाग कर अपनी माँ के गले लग गयी जिसकी वजह से यह विश्वास हो गया कि यही बच्ची के माता–पिता है. वंदना (परिवर्तित नाम)का कहना है कि "लीडरशिप के सेशन में हमे मुसीबत में फंसे बच्चों की मदद करना सिखाया था और मेने उसी सीख को ध्यान में रखा और एक गुम हुयी बच्ची को उसके माता–पिता से मिलाया।"

सरकारी विद्यालयों में हुआ बाल संसद का गठन

विद्यालय ही वह स्थान होता है जहाँ बच्चों का चहुंमुखी विकास होता है और HCL फाउंडेशन एवं उसकी साथी संस्था चाइल्डहुड इन्हान्समेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन (चेतना) भी इसी ओर प्रयासरत है. बच्चों को लीडरशिप के गुण सिखाने एवं उन्हें अपनी बात को सही तरीके से कहने हेतु सरकारी विद्यालयों में बाल संसद का गठन किया गया।

चेतना संस्था HCLफाउंडेशन के सहयोग से लखनऊ और गौतम बुद्ध नगर के 16 सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों की लीडरशिप पर काम कर रही है. कोविड के बाद जैसे ही बच्चों के विद्यालय खुले, साथी संस्था की टीम इन सभी स्कूलों में बाल संसद का गठन कर रही है. बाल संसद को गठित करने का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी स्तर पर बच्चों को लीडरशिप के गुण सिखाना और उनके विद्यालय में होनी वाली हर छोटी–बड़ी गतिविधियों में बच्चों को प्रतिभाग कराकर उनको जिम्मेदारी के भाव से परिचित कराना है जैसा कि सरकार भी इस काम के लिए सभी विद्यालयों को प्रोत्साहित कर रही है. बाल संसद के गठन की प्रक्रिया भी आम चुनाव की तरह ही करायी गयी जिसके माध्यम से बाल संसद के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सदस्यों का चुनाव करवाया गया और चयनित बाल संसद के बच्चों को अलग–अलग समितियों की जिम्मेदारी भी दी गयी. इस पुरी प्रक्रिया में बच्चों ने हमारे देश की चुनावी प्रक्रिया को भी समझा और पुरी लोकतांत्रिक व्यवस्था जानी कि कैसे देश में चुनाव होते है और कैसे नेता संसद में या विधानसभा में पहुँचते है. गठन से पूर्व साथी संस्था की टीम ने बच्चों को पुरी प्रक्रिया समझाइ फिर कुछ बच्चों ने अपनी दावेदारी प्रस्तुत की और चुनाव लड़ा फिर चुनाव प्रक्रिया संपन्न करायी गयी इस प्रक्रिया में चुनाव आयोग, पीठासीन अधिकारी ,पोलिंग एजेंट आदि भी बनाये गए इन सभी पदों और कार्यों का निर्वाह भी बच्चों ने ही किया. बाल संसद के गठन हेतु मतदान केंद्र बनाये गए, पोलिंग बूथ बनाये गए और मतदाता सूची बनाई गयी जिससे चेक कर के सभी बच्चों ने वोट डाले उसके बाद वोट काउंटिंग कर जो बच्चा प्रथम आया उसे बाल संसद का अध्यक्ष और जो सेकंड आया उसे उपाध्यक्ष बनाया गया साथ ही साथ इस चुनाव प्रक्रिया में प्रतिभाग करने वाले बच्चों को सभी की सहमती से बाल संसद की अन्य समितियों का सदस्य भी बनाया गया जिसमे पर्यावरण समिति, खेल–कूद समिति, मध्यान भोजन समिति, वाल मैगजीन समिति प्रमुख थी. अंत में बाल संसद में चुन कर आये सभी बच्चो को शपथ भी दिलवाई गयी और समिति के अनुसार उनको नेम टैग देकर उनकी जिम्मेदारी भी बताई गयी। बाल संसद का गठन स्कूल के शिक्षक– शिक्षिकाओं की देख–रेख में हुआ इस अवसर पर स्कूल के शिक्षक सत्यम शिवम् सुदरम जी ने बताया कि इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि यहां बाल–संसद का गठन इतने लोकतांत्रिक तरीके से हुआ है साथ ही उन्होंने कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए इस बाल संसद का गठन बहुत महत्वपूर्ण है बच्चे इसके माध्यम से अपनी बात को किसी भी फोरम तक पंहुचाना सीख सकते है। बाल संसद में चुन के आये बाल नेता बबली (परिवर्तित नाम) का कहना है कि "वो आज मै बहुत खुश हूँ कि मै अपने पहली बार चुन कर नेता बनी और में एक अच्छे नेता की तरह बच्चों एवं स्कूल की समस्या को प्रिंसिपल मैडम के सामने लेकर जाऊंगी।"

आओ खुल कर बात करें, माहवारी के दौरान स्वच्छ रहे

समाज में यह एक आम धारणा है कि महिलाओं और बच्चियों को माहवारी के बारे में खुल कर बात नहीं करनी चाहिए लेकिन HCL फाउंडेशन की साथी संस्था वाश इंस्टिट्यूट ने विश्व मासिक धर्म स्वच्छता दिवस पर उपस्थित सभी छात्राओं को यह सन्देश दिया कि माहवारी विषय पर हमे खुल कर बात करनी चाहिए और इन दिनों में स्वच्छता का बहुत ध्यान रखना चाहिए।

विश्व मासिक धर्म स्वच्छता दिवस हर साल 28 मई को पूरी दुनिया में मनाया जाता है, इसकी शुरुआत मई 2014 में जर्मन संस्था वाश यूनाटेड ने की थी. महिलाओं को मासिक धर्म 28 दिनों के भीतर आते है और यह कम से कम पांच दिनों तक होता है इसी कारण इस खास दिवस को मानाने के लिए पांचवें महीने में 28 तारीख का चयन किया गया।

यह महिलाओं के जीवन की एक प्राकृतिक प्रकिया है परन्तु फिर भी समाज में इस पर बात करने में बहुत हिचक होती है और महिलाओं को इन दिनों जो भी परेशानी होती है उसको लेकर वो खुल कर बात भी नहीं कर पाती है. इस दिवस को मानाने के पीछे का उद्देश्य किशोरियों और महिलाओं को पीरियड्स जो कि हर महीने होते है और उन पांच दिनों के लिए स्वच्छता के लिए जागरूक करना था। इस वर्ष साथी संस्था ने इस मौके पर यही सन्देश दिया कि हमे बिलकुल भी शर्म नहीं करनी चाहिए और इस विषय पर समझ बनाने और इन दिनों स्वयं को कैसे ज्यादा से ज्यादा साफ सफाई से रखा जाए पर अपनी जानकारी बढ़ानी चाहिए और खुल कर बात करनी चाहिए. वाश इंस्टिट्यूट HCL फाउंडेशन के सहयोग से हर साल इस दिन को बड़े ही धूमधाम से नोएडा के 39 विद्यालयों, 03 इंटर कॉलेज तथा 3 स्लम समुदायों में जागरूकता के रूप में मनाती है , परन्तु इस बार कोरोना जैसी घातक महामारी के कारण विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस समारोह का आयोजन ऑनलाइन आयोजित किया गया, जिसके अंतर्गत 120 छात्राओं को माहवारी के दौरान अपने को स्वच्छ और स्वस्थ कैसे रखना है , किस प्रकार का भोजन ग्रहण करना चाहिए से सम्बंधित चर्चाएँ की गयी।

बाल संसद के माध्यम से बच्चों में की जायेगी नेतृत्व क्षमता की वृद्धि

पृष्ठ (1) का शेष

जिम्मेदारी दी जाएँगी जैसे विद्यालय में पेड़ पौधे होंगे तो इसके लिए पर्यावरण की सुरक्षा और देखभाल के लिए कुछ बच्चों को पर्यावरण समिती की जिम्मेदारी दी जायेगी, विद्यालय में मध्यान भोजन की व्यवस्था के लिए कुछ बच्चों को मध्यान भोजन समिती की जिम्मेदारी दी जायेगी, विद्यालय में खेल–कूद भी होते है तो कुछ बच्चों को खेल–कूद समिती की जिम्मेदारी दी जायेगी इस तरह से वह सभी क्रियाकलाप जो विद्यालय में बच्चों के लिए है इसके लिए संबधित समिती बनाई जायेगी जिसमें हर महीने नए बाल संसद के ही बच्चों को नई जिम्मेदारी दी जायेगी। साथी संस्था के साथी हर महीने बाल संसद की बैठक करवाएंगे जो कि बच्चों द्वारा ही स्कूल टीचर एवं साथी संस्था के साथियों के मार्गदर्शन में करेंगे। इस प्रकार उपस्थित सभी प्रतिभागियों को कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी एवं उनके मन में आये सवालों का जवाब भी दिया. जैसे कि स्कूल टीचर की भूमिका के बारे में सभी ने पूछा तब बतया गया कि वो एक मार्गदर्शक की भूमिका निभायेंगे उन्हें इस कार्यक्रम में अलग से कोई समय नहीं देना।

सहयोगी संस्थाएं
KATHA
WASH INSTITUTE
shef
the kutumb foundation
pravah
Bodh Shiksha Samiti